वर्ष 6, अंक 66, अक्टूबर 2020

ISSN 2454-272

Peer Reviewed Journal

Impact Factor: 1.888 [GIF

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिक

जनकृति

अंक 66

अक्टूबर 202

JANKRITI

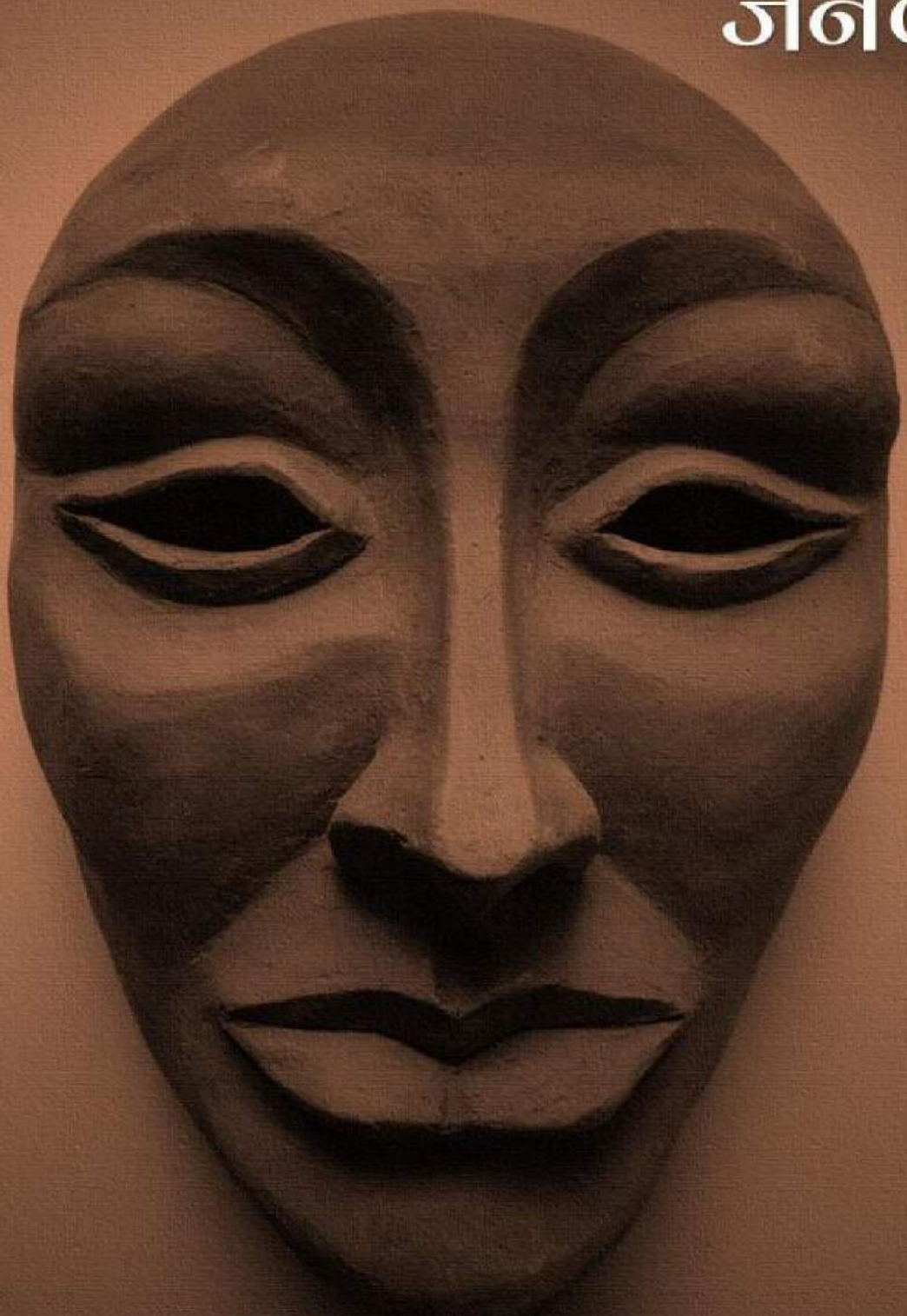

संपादक

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

Editor

Dr. Kumar Gaurav Mishra

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
25.	अस्मिता एवं अस्मितामूलक-विमर्श की अवधारणा एवं सिद्धांत: पीयूष राज	183-190
26.	हिंदी के प्रथम आधुनिक कवि : एक विचार- डॉ. मीनाक्षी	191-195
27.	देश की विडंबनाओं का 'जुलूस': डॉ. धनंजय कुमार साव	196-204
28.	आतंक एवं विस्थापन की मार्मिक पीड़ा को बयां करता उपन्यासः शिगाफ: डॉ. कुमारी रीना	205-212
29.	नामवर सिंह के काव्य विचारों में नए प्रतिमानों का अनुशीलन: डॉ॰ सुनील कुमार मिश्रा	213-216
30.	मिथक इतिहास और वर्तमान: डॉ. नेहा कल्याणी	217-221
31.	राष्ट्र की अवधारणा और सांस्कृतिक पहचान: अरुणिमा	222-228
32.	रामकथा विषयक निबंधों का अनुशीलन: डॉ. राजकुमार व्यास	229-234
33.	स्वप्न और संघर्ष के स्वर डॉ. रवि रंजन	235-245
34.	रिश्तों के बंधन में स्वच्छंदता का स्वर : 'सपनों की होम डिलीवरी': श्रुति पाण्डेय	246-249
35.	साहित्य के परिप्रेक्ष्य में 'तुलना' के घटक: धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	250-252
36.	सामाजिक जागृति तथा शोषण से मुक्ति के लिए प्रतिबंध संजीव जी का कथा साहित्य ('अपराध' के संदर्भ में): डॉ. कुमारी उर्वशी	253-262
37.	आदिवासी उपन्यासों के आईने में स्त्री जीवन: डॉ. उपमा शर्मा	263-268
38.	आधुनिक युगबोध और गुरु नानक वाणी - डॉ. शोभा कौर	269-276
39.	रंग-बिरंगे दोहों का पुष्पगुच्छ : बिहारी सतसई: अमरेन्द्र प्रताप सिंह	277-282
40.	शैलेष मटियानी की कहानियों में अभिव्यक पर्वतीय जीवन संघर्ष के विविध आयम: ऋतु	283-290
41.	कृष्ण भक्ति की सिरताज 'ताज'- सत्रहवीं शताब्दी की स्त्री कृष्ण भक्त लेखिका: ज्योति	291-296
42.	समकालीन कविता का सरोकार: डॉ. रामचरण पांडेय	297-302
43.	प्रमुख स्मृतियों में मानव कल्याण की अवधारणा: आलोक कुमार झा	303-305
44.	सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति तथा लोक जीवन: विजयश्री सातपालकर	306-308
	साहित्यिक विधाएँ	
45.	साहित्यिक विधाएँ: कविता- सुशांत सुप्रिय, मनीष सिंह	309-311
46.	साहित्यिक विधाएँ: कहानी- बाढ़ और प्यार: आकांक्षा सक्सेना	312-318
47.	साहित्यिक विधाएँ: लघुकथा- अधिनायक: सीताराम गुप्ता	319-320

Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 66, October 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रि
(विशेषज्ञ समीक्षित
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.88
www.jankriti.co
वर्ष 6, अंक 66, अक्टूबर 202

साहित्य के परिप्रेक्ष्य में 'तुलना' के घटक

धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक आचार्य
हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड
dpsingh777@gmail.com

सारांश

तुलनात्मक साहित्य सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में पिरोकर सहधर्म और वसुधैव कुटुम्बकम के भाव को विकसित करते में सहायक है। आज वैश्वीकरण के दौर में दिनोंदिन क्षीर्ण होती मानवीय संवेदना को बचाने के लिए ऐसी अध्ययन शाखाओं को विकसित करना जरूरी है। इस प्रक्रिया में हमें उन तत्वों की पहचान करना होगा जो मनुष्य को एकता का पाठ पढ़ा सकें। सतत् गंभीर चिन्तन से ही मानवता के गुण विकसित हो सकते हैं जो साहित्य का उद्देश्य है, चाहे वह जिस देश या भाषा का हो। तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा ही हम अलग-अलग देशों और भाषाओं में रचित साहित्य के मर्म को पहचान सकते हैं।

बीज शब्द *घटक, तुलनात्मक साहित्य, विश्व साहित्य, अंतःसाहित्य, अध्ययन शाखा, समाज-संस्कृति, लोक मान्यताएँ, रीति-रिवाज, भाषाई वैशिष्ट्य, सृजन, आस्वाद।*

आमुख

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1907 में तुलनात्मक साहित्य के संदर्भ में 'विश्व साहित्य' का प्रयोग किया जो इस अध्ययन-शाखा की व्यापकता को रेखांकित करता है। तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' का हिन्दी अनुवाद है। तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन करते समय सबसे पहले 'तुलना' पद मिलता है जिसका आशय एक से अधिक वस्तुओं के मध्य गुण, मान, अच्छा, बुरा, कम या अधिक आदि को आधार बनाकर किया जाने वाला अध्ययन है। 'तुलनात्मक' पद तुलना का ही विशेषण है जो ऐसी प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है जिसमें एक से अधिक वस्तुओं के मध्य साम्य-वैषम्य दिखाने का प्रयास किया जाता है। तुलना के विचार से किया जाने वाला कार्य 'तुलनात्मक' कहलाता है। हेनरी एच एच रेमाक तुलनात्मक साहित्य को परिभाषित करते हुए इसे राष्ट्र की सीमा से बाहर किया जाने वाला अध्यनन स्वीकार करते हैं- ''तुलनात्मक साहित्य एकक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है।''[1]

रेने वेलेक तुलनात्मक साहित्य की व्यापकता की ओर संकेत करते हुए इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मूल्यांकित करते हुए कहते हैं कि- ''तुलनात्मक साहित्य के समग्र रूप का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है जिसके मूल में यह भावना निहित रहती है कि साहित्य सृजन और आस्वाद की चेतना जातीय एवं राजनैतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एक रस अखंड होती है।''[2]

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा. नगेन्द्र तुलनात्मक साहित्य के महत्त्वपूर्ण अध्येताओं में माने जाते हैं। उनका मानना है कि- ''तुलनात्मक साहित्य एक प्रकार का अंतः साहित्य अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य अनेकता में एकता की साधना है।''[3]

प्रसिद्ध अध्येता डा. इंद्रनाथ चौधुरी तुलनात्मक साहित्य को स्पष्ट करते हुए इसे राष्ट्र की सीमा से पार की